संस्कृत साहित्य सौरभ

000082

64

स्वप्नवासवदत्ता

Gandhi Smarak Nidhi
Karnatak Shakha
138, NEHRU CIRCLE
BANGALORE-3.

BANGALORE

015,2BHA
152w3N56;1
H-000682

TVA PRACHAR CENTRE
BANGALORE

000682

संस्कृत-साहित्य-सौरभ
११

भास-कृत

स्वप्नवासवदत्ता

●

श्री सुशील
द्वारा
कथा-सार

●

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....................
ACC. NO. 9026
CALL NO.....................
BANGALORE-1.

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
सम्पादित

●

१९५६

सत्साहित्य-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE....................
ACC. No....................
CALL No....................
BANGALORE-1.

H·000682

O15,2BHA 152w3N56

दूसरी बार : १६५६
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

SMARAKA GRANTHALAYA
DATE....................
ACC No..........................
CALL No....................
BANGALORE

000682

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो जिसके सम्बन्ध में मूल्यवान सामग्री का अनन्त भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें, परन्तु उसका रस वे हिन्दी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर संस्कृत के महाकवियों, नाटककारों आदि की प्रमुख रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हम हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन हिन्दी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

इस माला की कई पुस्तकें निकल चुकी हैं और आगे निकल रही हैं। आशा है हिन्दी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रंथ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

दूसरा संस्करण

इस माला की पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हो रही हैं और हमें हर्ष है कि कुछ पुस्तकों का चन्द महीनों में दूसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है। आशा है कि भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रेमी पाठक इन पुस्तकों को और भी चाव से अपनावेंगे।

—मंत्री

भूमिका

'स्वप्नवासवदत्ता' महाकवि भास की रचना है। भास बड़े प्रसिद्ध कवि हुए हैं। कालिदास, बाणभट्ट और राजशेखर आदि स्वनामधन्य कवियों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की है। अभिनव गुप्त, वामन और भामह आदि आचार्यों ने भी उनके रूपकों का उल्लेख किया है, लेकिन खेद है कि इतनी प्रसिद्धि होने पर भी इनके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है कि यह कब और कहाँ हुए। अधिकांश विद्वान मानते हैं कि यह तीसरी सदी में हुए थे।

इनके लिखे तेरह रूपकों का पता चला है। पर बहुत-से विद्वानों को इस बारे में शक है कि वे सब भास के लिखे हुए है। हाँ, जहाँतक 'स्वप्न-वासवदत्ता' का सम्बन्ध है, उसके बारे में ये लोग भी कहते है कि वह भास-कृत है। इस नाटक में कवि की कला का अपूर्व रूप उभरा है। इसमें वत्सराज उदयन और मगध की राजकुमारी पद्मावती के विवाह की कहानी है, लेकिन वस्तुतः इस नाटक में उदयन की पहली रानी वासवदत्ता के अनन्य प्रेम और मन्त्री यौगन्धरायण की अनुपम स्वामिभक्ति का अपूर्व चित्रण हुआ है। दूसरे नाटकों की तरह इसमें अस्वाभाविकता का लेश भी नहीं है, न इसमें राजवर्ग की कामुकता है, न रनवास के षड्यंत्रों का चक्रव्यूह। यह तो निर्दोष परन्तु विशद प्रेम का मुग्ध करने वाला चित्र है। सब चरित्र एक-से-एक बढ़कर उदार हैं।

नाटकीय तंत्र की दृष्टि से भी यह एक सफल नाटक है। भास छोटे-छोटे वाक्य लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं, परन्तु भाव इनमें भरे रहते हैं। इनकी भाषा सरल, स्वाभाविक और भावपूर्ण है। यह मानव-हृदय के सच्चे पारखी हैं। प्रकृति-चित्रण में भी यह किसी से पीछे नहीं हैं। जयदेव ने इन्हें कविता-कामिनी का हास माना है।

इनके नाटकों का पता अभी सन् १९०९ और १९१२ में ही लगा है।

—सम्पादक

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE....................
ACC. NO..........................
CALL NO.....................
BANGALORE

स्वप्नवासवदत्ता

परिचय

प्राचीन काल में वत्स नाम का एक प्रसिद्ध राज्य था। कौशाम्बी उसकी राजधानी थी। महाराज उदयन वहां के राजा थे। वासवदत्ता उनकी रानी का नाम था। वह उज्जैनके प्रसिद्ध राजा प्रद्योत की बेटी थी। अपनी वीरता के कारण प्रद्योत चंडमहासेन के नाम से प्रसिद्ध थे। एक बार उदयन के एक शत्रु आरुणि ने कौशाम्बी पर हमला करके वत्स पर अधिकार कर लिया। उदयन एक वीर योद्धा थे। यौगन्धरायण और रुमण्वान जैसे नीतिनिपुण उनके मंत्री थे। फिर भी वह हार गए और वहां से भाग कर लावाणक में रहने लगे। वह वत्स-राज के भीतर मगध की सीमा पर एक छोटा-सा जनपद था।

महाराज उदयन तो महारानी वासवदत्ता के प्रेम के सहारे और शिकार खेल कर दिन बिता देते थे, लेकिन उनके मंत्रियों को यह सब अच्छा नहीं लगता था। वे अपना राज्य फिर से जीतने का उपाय सोचा करते थे। आखिर यौगन्धरायण ने ख़ूब सोच-विचार कर एक योजना बनाई। उसके अनुसार काम भी शुरू कर दिया

गया। उन्होंने वह काम कैसे किया और वह क्या था, उसीका इस नाटक में वर्णन किया गया है।

: १ :

मगध की राजधानी राजगृह के निकट एक तपोवन था। उसमें मगध की राजमाता महादेवी रहती थीं। वहीं उनकी बेटी पद्मावती उनसे मिलने आया करती थी। एक बार जब वह उनसे मिलकर वापस राजगृह लौट रही थी तो रास्ते में एक आश्रम में ठहरीं। इसी समय वत्सराज की रानी वासवदत्ता और मन्त्री यौगन्धरायण भी वहाँ आये। यौगन्धरायण संन्यासी के वेष में थे और वासवदत्ता मालवा की स्त्रियों की पोशाक पहने हुए थी। आवन्तिका उनका नया नाम था। उस समय अवध के राजपुरुष 'हटो' 'हटो' कहकर लोगों को हटा रहे थे। वासवदत्ता को इस तिरस्कार से बड़ा दुःख हुआ, परन्तु यौगन्धरायण न उनसे कहा, "अनजान में तो देवताओं का भी तिरस्कार हो जाता है। सुख-दुःख पहिए के समान घूमते रहते हैं। फिर आपने तो पति के कल्याण के लिए सुख का त्याग किया है, इसलिए आपको मान-अपमान का विचार नहीं करना चाहिए।"

इसी समय कंचुकी ने आकर राजपुरुषों को लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करने से रोक दिया। इसी कंचुकी से यौगन्धरायण को पद्मावती के बारे में सब बातें मालूम

हुई। उसने मन-ही-मन सोचा—ओह, ठीक है! यह मगध की राजकुमारी पद्मावती है। इसके बारे में हमारे ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की है कि यह हमारी रानी होगी। हमारे महाराज की यह भावी महारानी है—यह जानकर मेरे मन में भी इसके प्रति भक्ति उत्पन्न हो गई है। इतने में ही दासियों के साथ राजकुमारी वहाँ आ पहुँची। मुनि-पत्नियों ने उसका स्वागत किया। उसकी बातें सुनकर वासवदत्ता मन-ही-मन सोचने लगी—यह राजकुमारी रूपवती ही नहीं, मीठा बोलनेवाली भी है।

और उसके मन में भी बहन का-सा स्नेह पैदा होने लगा। तभी तापसी ने दासी से पूछा, "भद्रे, पद्मावती का अभी किसी राजा से सम्बन्ध हुआ या नहीं ?"

दासी ने उत्तर दिया, "हां, पद्मावती के विवाह की बातचीत उज्जैन के राजा प्रद्योत के पुत्र के साथ चल रही है। पर अभी तक सम्बन्ध पक्का नहीं हुआ है।"

इस समाचार से वासवदत्ता को बड़ा हर्ष हुआ क्योंकि इस नाते से पद्मावती उसकी भाभी होने जा रही थी।

लेकिन पद्मावती ने इस ओर ध्यान न देकर कंचुकी से कहा, "मैंने अपनी आत्मा के कल्याण के लिए मुनिजनों का दर्शन कर लिया। अब आप यहाँ के तपस्वियों से निवेदन कर दें कि उन्हें जो कुछ चाहिए वह हमारी ओर से मिलेगा।"

ऐसा ही किया गया, लेकिन कोई आगे नहीं आया। वहाँ के सब लोग सदा सन्तुष्ट रहते थे, पर इस अवसर से लाभ उठाकर यौगन्धरायण ने राजकुमारी से निवेदन किया, "यह आवन्तिका मेरी छोटी बहन है। इसका पति परदेस गया हुआ है। कुछ दिन के लिए मैं इसे आपके पास छोड़ना चाहता हूँ।"

कंचुकी ने यह सुनकर पद्मावती से कहा, "श्रीमती-जी, इस तपस्वी की यह प्रार्थना तो बहुत बड़ी है। इसे कैसे स्वीकार किया जा सकता है? तप, धन और प्राण सबकुछ दिया जा सकता है, पर धरोहर की रक्षा करना बड़ा ही कठिन है।

राजकुमारी ने उत्तर दिया, "जो चाहे मांगने की घोषणा करने के बाद अब नहीं कैसे किया जा सकता है। इसकी प्रार्थना स्वीकार करनी ही पड़ेगी।"

राजकुमारी के इस विचार से यौगन्धरायण को बड़ी खुशी हुई और उसने वासवदत्ता से राजकुमारी के पास जाने को कहा। उसे जाना पड़ा। वह दुखी तो बहुत हुई, पर और कोई रास्ता ही नहीं था। राजकुमारी ने उसका बड़ा स्वागत किया। उसके रूप-गुण आदि से सबने उसे बड़े घर की बेटी समझा।

इसी समय राह चलता एक ब्रह्मचारी वहाँ आया।

दोपहर का समय था। विश्राम करने के लिए वह

वहाँ रुक गया। वह लावाणक में रहकर पढ़ा करता था। अब वहां एक दुर्घटना हो गई थी, जिसके कारण उसे बीच ही में लौटना पड़ा।

यौगन्धरायण ने पूछा, "वह क्या घटना हुई ?"

ब्रह्मचारी ने उत्तर दिया, "वहाँ राजा उदयन रहते थे। एक दिन वह शिकार खेलने गये हुए थे कि पीछे गांव में आग लग गई और उनकी रानी वासवदत्ता उसमें जल कर मर गई। रानी को बचाने की चेष्टा में मंत्री योगन्धरायण भी जल मरे। लौटने पर जब राजा ने यह सब सुना तो उनका बुरा हाल हुआ। किसी तरह मंत्रियों ने रोका, नहीं तो वह भी उसी आग में जल मरते। उन्होंने बहुत विलाप किया। जलने से बचे हुए रानी के गहनों को छाती से लगाकर वे इतना रोये कि बेहोश हो गए।"

यह कहानी सुनकर वासवदत्ता को बड़ा दुःख हुआ। वह रोने लगी। पद्मावती ने समझा कि एक दुखिया का दुःख सुनकर इसकी करुणा जाग उठी है। इधर यौगन्धरायण ने ब्रह्मचारी से फिर पूछा, "क्या किसी मंत्री ने राजा को ढाढ़स नहीं बंधाया ?"

ब्रह्मचारी ने कहा, "क्यों नहीं बंधाया ! मन्त्री रुमण्वान ने राजा को शांत करने में कुछ भी उठा न रखा। राजा के न खाने पर वह भी नहीं खाता। रोता रहता। उनके दुःख को अपना दुःख मानता। बड़ी कठिनता

से वह राजा को उस गांव से ले गया। उनके जाते ही वह गांव उजड़ गया। इसलिए मैं भी वहाँ से चला आया। इसके आगे क्या हुआ यह मुझे नहीं मालूम।"

यह कथा सुनाकर ब्रह्मचारी वहां से चला गया। कुछ देर बाद यौगन्धरायण ने भी राजकुमारी और वासवदत्ता से बिदा ली। सांझ हो गई थी, इसलिए राजकुमारी भी तापसी को प्रणाम करके सबके साथ घर चली गई।

: २ :

वासवदत्ता पद्मावती के पास रहने लगी और धीरे-धीरे उनमें प्रीति बढ़ने लगी। वे एक साथ खाती-पीतीं, बैठती और खेलतीं। एक दिन गेंद खेलते-खेलते वासवदत्ता पद्मावती के रूप की प्रशंसा करने लगी। इसी प्रसंग में विवाह की बात चल पड़ी। दासी ने बताया कि पद्मावती उज्जैन के राजा प्रद्योत के बेटे से विवाह नहीं करना चाहती। वासवदत्ता ने पूछा, "तो किससे करना चाहती है।" दासी ने उत्तर दिया, "वत्सराज उदयन से।"

वासवदत्ता चौंक पड़ी। उसने पूछा, "क्यों? उसमें ऐसा क्या गुण है?"

दासी बोली, "वे बड़े ही स्नेही, दयालु और अनुरागशील हैं।" यह सुनकर वासवदत्ता मन-ही-मन गद्गद्

हो उठी। इसी समय दासी ने पद्मावती से कहा, "राजकुमारीजी, यदि वह राजा कुरूप हुआ तो क्या करोगी ?"

वासवदत्ता बोल उठी, "नहीं-नहीं, सखी, वह राजा बड़ा ही सुन्दर है।"

पद्मावती ने पूछा, "आर्ये, आप उस राजा को कैसे जानती हैं ?"

इस प्रश्न से एक बार तो वासवदत्ता घबरा गई, पर तुरन्त ही एक उपाय उसके ध्यान में आ गया। उसने कहा, "वह राजा बड़ा सुन्दर है—इस तरह उज्जैन के लोग कहा करते हैं।"

पद्मावती बोली, "आपका कहना ठीक हो सकता है। उज्जैन में राजा उदयन को सभी जानते हैं। जिसकी सभी प्रशंसा करें वही तो सच्चा सौन्दर्य है।"

इसी समय राजकुमारी की धाय ने आकर सूचना दी कि पद्मावती की सगाई वत्सराज उदयन से हो गई है। वासवदत्ता सहसा बोल उठी, "हाय, यह तो बड़ा अन्याय है।"

धाय ने पूछा, "इसमें अन्याय क्या हुआ ?"

वासवदत्ता फिर पकड़ी गई, लेकिन किसी तरह संभलकर बोली, "और तो कुछ नहीं, लेकिन राजा दूसरे विवाह के लिए इतनी जल्दी तैयार हो गया, यही अन्याय है।"

धाय ने उत्तर दिया, "आर्ये, बड़े लोगों के हृदय विचार-प्रधान होते हैं। समझाने-बुझाने से वे शीघ्र मार्ग पर लाये जा सकते हैं।"

वासवदत्ता ने फिर पूछा, "आर्ये, क्या उदयन ने स्वयं आकर पद्मावती से विवाह करने की इच्छा प्रकट की थी ?" धाय ने बताया, "नहीं, राजा उदयन ने खुद विवाह करने की इच्छा प्रकट नहीं की। वह तो किसी दूसरे काम से यहाँ आये हैं। उनके कुल, रूप और गुण को देखकर मगध के महाराज ने अपने-आप ही अपनी बहन उनको दी है।"

इस उत्तर से वासवदत्ता को सन्तोष हो गया। वह समझ गई कि इसमें राजा उदयन का कोई अपराध नहीं है। इसी समय दासी ने आकर सूचना दी कि पद्मावती का विवाह आज ही होगा। यह समाचार पाकर वे सब जल्दी-जल्दी अंदर महल में चले गये।

देखते-देखते विवाह की तैयारियाँ शुरू हो गईं। चारों तरफ हर्ष छा गया। सब उसमें डूब गए। लेकिन इस समय भी एक व्यक्ति ऐसा था, जो सुखी नहीं था। महाराज उदयन का विवाह पद्मावती के साथ हो रहा है--यह देखकर वासवदत्ता को बहुत दुःख हुआ, पर वह कर कुछ भी नहीं सकती थी। मंत्री यौगन्धरायण का यही आदेश था। जब वह बहुत दुखी हुई तो विवाह की

भीड़भाड़ से दूर प्रमदवन में चली गई और वहां बैठकर अपने भाग्य पर विचार करने लगी।

लेकिन उसके भाग्य में शांति से बैठना नहीं बदा था। एक दासी उसे ढूँढ़ती हुई वहाँ भी आ पहुँची। वह जय-माला बनाने के लिए फूल लाई थी। बोली, "महारानीजी कहती हैं कि आप बड़े घर की बेटी हैं, पद्मावती पर आपका स्नेह है और शिल्पकला में चतुर भी हैं। इस कारण आप यह वरमाला गूँथ दें।"

वासवदत्ता को इस बात से और भी दुःख हुआ, पर छाती पर पत्थर रखकर वह माला गूँथने लगी। सबने उस माला की बड़ी प्रशंसा की, लेकिन उसके मुँह से यही निकला, "हाय, अब क्या करूँ? मेरे ऊपर यह कैसी विपत्ति आ पड़ी है? मेरे पति भी दूसरे के हो गए!"

: ३ :

विवाह के बाद एक दिन पद्मावती सब सखी-सहेलियों के साथ प्रमदवन गई। वह यह देखने आई थी कि शेफालिका के पौधे फूले हैं या नहीं। उसका विचार था कि इन फूलों को देखकर महाराज उनकी प्रशंसा करेंगे। बातों-ही-बातों में उसने कहा, "मुझे एक बात का संदेह है कि क्या देवी वासवदत्ता भी महाराज को उतना ही चाहती थीं जितना मैं चाहती हूँ?"

इसपर वासवदत्ता बोली, "वह तो तुमसे भी अधिक

चाहती थी ।" पद्मावती चौंक पड़ी। पूछा, "यह बात तुम कैसे जानती हो ?"

वासवदत्ता घबराई तो, पर फिर शीघ्र ही संभलकर उसने कहा, "यदि वह कम चाहती तो अपने बंधु-बांधवों को छोड़कर उनके साथ कैसे चली जाती ?"

इसी तरह वीणा सीखने की बात चली तो पद्मावती ने बताया, "एक दिन मैंने उनसे कहा था कि मैं आपसे वीणा बजाना सीखूंगी तो वह बोले ही नहीं। बस एक लंबी साँस खींचकर चुप रह गए। जान पड़ता है तब उनको अपनी रानी वासवदत्ता की याद आ गई थी ।"

वे इसी तरह बातें कर रही थीं कि विदूषक वसंतक के साथ महाराज उदयन भी वहाँ आ गए। उन्हें देखकर पद्मावती सब सखियों के साथ चमेली के कुंज में चली गई, क्योंकि वासवदत्ता का यह नियम था कि वह किसी पुरुष के सामने नहीं आवेगी। महाराज बाहर ही एक शिला पर बैठ कर पद्मावती की राह देखने लगे। लेकिन धूप बड़ी तेज थी। वसंतक ने कहा, "आओ, हम चमेली के कुंज में चल कर बैठें।"

उन्हें उधर आते देखकर पद्मावती सहसा घबरा गई, परन्तु दासी ने तुरन्त चमेली की एक डाल हिला दी। उसपर भौंरे बैठे हुए थे। वे उड़कर वसंतक को काटने लगे। इसलिए वे अंदर न आ सके। बाहर ही बैठ गए

श्रौर बातें करने लगे। वसंतक ने पूछा, "महाराज, यह बताइए कि श्राप वासवदत्ता को अधिक चाहते थे या पद्मामती को अधिक चाहते हैं ?"

महाराज ने पहले तो प्रश्न को टालना चाहा। उन्हें डर था कि वसंतक किसीसे कह देगा, परन्तु जब उसने बहुत श्राग्रह किया श्रौर विश्वास दिलाया तो वह बोले, "पद्मावती सुन्दर है, शीलवती है, भोली है श्रौर मीठा बोलने वाली है, लेकिन मेरा मन अब भी वासवदत्ता की श्रोर लगा हुश्रा है। उस मन को वह नहीं जीत सकी।"

यह उत्तर सुनकर वासवदत्ता को बहुत खुशी हुई। लेकिन पद्मावती की दासी ने कहा, "राजकुमारी, श्रापके पति को वासवदत्ता का बड़ा पक्षपात है !" पद्मावती ने तुरन्त उत्तर दिया, "नहीं-नहीं, ऐसा न कहो। महाराज दोनों को एक समान चाहते हैं तभी तो वह वासवदत्ता के गुणों को अभी तक नहीं भूले।"

इधर राजा ने वसंतक से पूछा, "अब तुम बताश्रो कि तुमको वासवदत्ता अच्छी लगती थी या पद्मावती अच्छी लगती है।"

काफी टालमटोल के बाद वसंतक ने जवाब दिया, "देवी पद्मावती में सब गुण हैं, पर वासवदत्ता में सबसे बड़ा गुण यह था कि वह बढ़िया स्वादिष्ट भोजन लेकर 'श्रार्य वसंतक, कहाँ गए' इस तरह मुझे खोज-खोज कर

खिलाती थीं। इसलिए वह मुझे ज्यादा प्रिय थीं।"

इन बातों की याद आ जाने से महाराज को बड़ा दुःख हुआ। आँखों में आँसू भर आये। यह देखकर वसन्तक उन्हें धीरज बँधाने लगा। महाराज ने उत्तर दिया, "तुम मेरी दशा नहीं जानते। दृढ़ स्नेह कभी नहीं छूटता। छोड़ने की कोशिश करने पर वह और भी दृढ़ तथा नया-सा हो जाता है। हां, थोड़ा रो लेने से मन अवश्य हल्का हो जाता है।" वसन्तक अब क्या कहता। महाराज का मुख आँसुओं से तर हो गया था, इसलिए मुँह धोने के लिए वह पानी लेने चला गया।

आँसू आ जाने के कारण महाराज ने आँखों पर कपड़ा रख लिया था, अतः वह इधर-उधर नहीं देख सकते थे। यह देखकर वासवदत्ता ने अनुभव किया कि वहाँ से जाने का यही ठीक अवसर है। वह पद्मावती को महाराज के पास ठहरने के लिए कहकर चुपचाप वहां से चली गई। कुछ देर बाद लता के पत्ते में पानी लेकर वसन्तक लौट आया। उसने पद्मावती को वहां देखा तो चौंक पड़ा। पद्मावती ने पूछा, "यह सब क्या है ?"

वह झिझकते-झिझकते बोला, "देवी, कास के फूलों का पराग उड़कर महाराज की आँखों में पड़ गया था। उसीके कारण इनकी आँखों से आँसू निकल रहे हैं। यह जल है। कृपाकर इन्हें दे दीजिए।"

पद्मावती जल लेकर महाराज के पास गई, बोली, "महाराज की जय हो। यह जल है, मुँह धो लीजिये।"

उसे देखकर महाराज भी चौंक पड़े, पर वसंतक ने चुपके से सब बातें उनके कान में कह दीं। इसलिए उन्होंने रानी को आदरपूर्वक पास बैठाकर वही बात कही जो वसंतक ने बताई थी। फिर वसंतक ने उन्हें याद दिलाया कि दोपहर-बाद मगध के महाराज उनको आगे करके मित्रों से मिलेंगे। इसलिए अब यहां से चलना चाहिए।

इसपर वे वहां से चले गये।

: ४ :

महाराज उदयन को राजमहलों में सब सुख प्राप्त थे, लेकिन उन्हें अपनी पहली रानी वासवदत्ता की बड़ी याद आती थी। इस नये विवाह से वह याद और भी बढ़ गई थी। वह एक दिन इसी चिन्ता में थे कि उन्हें देवी पद्मावती के बीमार हो जाने की सूचना मिली। दासी ने बताया कि पद्मावती के सिर में पीड़ा है। इस समाचार से उनकी चिन्ता और बढ़ गई। वह तुरन्त वसंतक के साथ समुद्रगृह की ओर चले। पद्मावती की शैया वहीं बिछी थी। समुद्रगृह में पहले वसंतक ने प्रवेश किया, परन्तु जैसे ही उसने अन्दर पैर रखा वह चिल्ला उठा। दीपक के मन्द प्रकाश में उसने देखा कि वहाँ एक सांप है। उसने महाराज को भी अंदर जाने से रोका,

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE

लेकिन वह नहीं माने। आगे बढ़कर उन्होंने ध्यान से उस साँप को देखा और हँस पड़े। बोले, "मूर्ख, यह तो बड़े फाटक पर लटकने वाली बंदनवार की माला है। मन्द-मन्द हवा के झोंकों से हिलते हुए दीपक के मन्द प्रकाश में यही सांप की तरह मालूम होती है।"

वसंतक की जान-में-जान आई, परन्तु अन्दर जाने पर पद्मावती उनको वहाँ नहीं मिली। वह अभीतक वहां आई ही नहीं थी। इसलिए महाराज वहां बैठकर उसकी राह देखने लगे। लेकिन पलंग पर बैठने के कारण उन्हें नींद आने लगी। सो उन्होंने वसंतक से कहा, "मित्र, मुझे नींद आती है। कोई कहानी कहो।"

वसंतक कहानी कहने लगा, "उज्जैन नाम की एक नगरी है। वहाँ बड़े सुन्दर-सुन्दर जलों के स्नान हैं।"

राजा ने सहसा टोककर पूछा, "क्या कहा! उज्जैन?"

वसंतक बोला, "यदि यह कहानी आपको पसंद न हो तो दूसरी कहूँ!"

राजा ने कहा, "पसन्द की तो कोई बात नहीं, परन्तु उज्जैन का नाम सुनकर मुझे उज्जैन के राजा की बेटी वासवदत्ता की याद आ गई।"

इसपर वसंतक बोला, "अच्छा जाने दीजिये। मैं दूसरी कहानी कहता हूं। एक ब्रह्मदत्त नाम का नगर है। उसमें काम्पिल्य नाम के राजा रहते थे।"

राजा ने तुरंत टोका, "अरे मूर्ख, राजा ब्रह्मदत्त था और नगर काम्पिल्य, ऐसा कहो। उलटा क्यों कहते हो ?"

इसी तरह मनोविनोद चल रहा था कि राजा को नींद आ गई। यह देखकर वसंतक भी अपनी रजाई लेने चला गया, क्योंकि उस समय सर्दी पड़ रही थी।

उधर वासवदत्ता को भी पद्मावती के सरदर्द का समाचार मिला। वह उसे देखने तुरन्त समुद्रगृह में पहुंची। दासी उसको अन्दर जाने को कहकर दवा लेने चली गई। भीतर जाकर वासवदत्ता ने देखा कि पद्मावती अकेली सो रही है। बस एक दीपक जल रहा है। उसके धुंधले प्रकाश के कारण ही वासवदत्ता ने महाराज को पद्मावती समझा। फिर महाराज मुँह ढके सो रहे थे। वह उन्हें पहचानती भी कैसे ? पद्मावती का वहां अकेला होना तो उसे बुरा लगा, लेकिन उसको इस तरह सोते देखकर उसने यही समझा कि उसकी पीड़ा दूर हो गई है। इसलिए उसने सोती हुई पद्मावती को जगाना ठीक नहीं समझा। पलंग का एक भाग खाली पड़ा हुआ था। उसने समझा कि पद्मावती ने जानबूझकर मेरे लिए यह स्थान छोड़ दिया है। बस वह चुपचाप वहां लेट गई।

इसी समय राजा उदयन सपने में बड़बड़ाने लगे, "हा वासवदत्ता !"

वासवदत्ता एकदम चौंक उठी, "अरे, यह तो महाराज हैं, पद्मावती नहीं। कहीं इन्होंने मुझे देख तो नहीं लिया। देख लिया तो यौगन्धरायण का इतने दिन का सभी किया-कराया व्यर्थ चला जायगा।"

राजा फिर बड़बड़ाए, "हा, अवन्तिराज-पुत्री !"

अब तो वासवदत्ता समझ गई कि महाराज सपने में बोल रहे हैं। वह काफी देर बड़बड़ाते रहे, लेकिन वासवदत्ता थोड़ी देर ठहरकर वहां से चली गई। जाते समय उसने देखा कि राजा का हाथ पलंग के नीचे लटक रहा है। उसे उठाकर वह ऊपर रखती गई। उसके छूने से राजा एकाएक चौंक उठे। उनकी नींद खुल गई। और वह वासवदत्ता को पुकारते हुए दौड़े। लेकिन अँधेरे में ठोकर खाकर गिर पड़े। इतने में वसंतक लौट आया। राजा ने उससे कहा, "वासवदत्ता मरी नहीं, जीती है। वह मुझे अभी जगाकर गई है। रुमण्वान ने मुझसे झूठ कहा था कि वह जलकर मर गई है।"

वसंतक ने जवाब दिया, "महाराज, यह कैसे हो सकता है। आपने अवश्य सपना देखा है।"

राजा को बड़ा दुःख हुआ। बोले, "अगर यह सपना है तो भगवान् करे मैं सदा सपना ही देखता रहूँ। मेरा यह पागलपन सदा बना रहे।"

इसपर वसंतक ने हँसकर कहा, "महाराज, इस राजमहल में अवन्ती सुन्दरी नाम की एक यक्षिणी रहती है। जान पड़ता है कि आपने उसे देख लिया है।"

राजा ने उत्तर दिया, "नहीं-नहीं, मित्र, वह वासवदत्ता थी। मैंने उसीको देखा है। उसने मेरा हाथ उठाकर पलंग पर रखा था।"

वसंतक को लगा जैसे राजा पागलपन की बातें कर रहे हैं। इसलिए वह उन्हें अपने महल में चलने को कहने लगा। इसी समय कंचुकी ने आकर निवेदन किया, "हमारे महाराज दर्शक ने कहा है कि आपके मन्त्री रुमण्वान बड़ी भारी सेना लेकर आरुणि का वध करने के लिए वत्स देश की ओर चल पड़े हैं। युद्ध में सदा जय पाने वाली हमारी सेना तैयार है। आप उठें। आपके बहुत-से शत्रुओं को हमने अपनी ओर मिला लिया है। प्रजा को भी धीरज बंधाया है। शत्रु को जीतने के लिए और जो कुछ करना चाहिए, वह हमने कर लिया है। सेनाएं गंगा पार कर चुकी हैं। इसलिए वत्स देश को अपने हाथ में समझो और शत्रु पर तुरन्त आक्रमण कर दो।"

यह समाचार सुनकर महाराज उदयन बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरन्त उठकर कहा, "मैं अभी जाकर युद्ध

करूँगा और उस दुष्ट आरुणि को पछाड़ूंगा ।"

: ५ :

युद्ध में महाराज उदयन की जय हुई। वत्स-राज पर फिर उनका अधिकार हो गया । वह इस विजय से बड़े प्रसन्न हुए । उन्हीं दिनों उज्जैन के महाराज महासेन ने रैभ्य गोत्र के एक कंचुकी को और महारानी अंगारवती ने वासवदत्ता की धाय वसुन्धरा को उनके पास भेजा । लेकिन प्रतिहारी ने उन्हें अन्दर महाराज के पास जाने से रोक दिया । बात यह थी कि उस दिन जब महाराज अपने प्रधान महल में थे, तब किसी परदेसी नट ने वीणा बजाई। महाराज तुरंत पहचान गए, "यह तो वासवदत्ता की वीणा घोषवती का शब्द है ।" जब उस नट से उस वीणा का हाल पूछा गया तो उसने बताया, "हमने इस वीणा को नर्मदा-तीर पर झाड़ियों में पड़ा पाया है। यदि यह महाराज के किसी काम की हो तो उन्हें भेंट कर दीजिए ।"

यह कथा सुनाकर प्रतिहारी ने कहा, "उस वीणा को पाकर महाराज मूर्छित हो गए। और जबसे उन्हें होश आया है तबसे वह वासवदत्ता की याद करके रो रहे हैं । ऐसी अवस्था में उनसे क्या कहा जा सकता है ?"

कंचुकी ने उत्तर दिया, "कोई चिन्ता नहीं। हमारी

बात का सम्बन्ध भी इसी कहानी से है। महाराज उसे सुनने को बड़े उत्सुक होंगे। इसलिए सूचना दे दो।"

प्रतिहारी ने ऐसा ही किया। उनके आने का समाचार जानकर महाराज ने पद्मावती को बुला भेजा। उन्हें इस बात का बड़ा आश्चर्य था कि महाराज महासेन ने उनके विवाह और विजय का समाचार इतनी जल्दी कैसे जान लिया। जब पद्मावती वहाँ आई तो उन्होंने उससे कहा, "पद्मावती, उज्जैन से कंचुकी और धाय आये हैं।" पद्मावती सब-कुछ सुन चुकी थी, और वह बड़ी प्रसन्न थी। बोली, "अहा, उनसे मुझे अपने बंधु-बांधवों का समाचार मिलेगा।"

पद्मावती की इस प्रसन्नता का राजा पर बड़ा प्रभाव पड़ा। वह बोले, "वाह, यह तो तुमने अपने बड़प्पन के योग्य बात कही। लेकिन तुम खड़ी क्यों हो! बैठती क्यों नहीं ?"

लेकिन पद्मावती ने बैठना स्वीकार नहीं किया। उसने कहा, "आपने दूसरा विवाह कर लिया है, यह जान कर इन लोगों का मन शायद उदास होगा।" इसपर राजा ने कहा, "यह ठीक है, लेकिन अगर तुम उनके सामने न आओगी तो वे यह समझेंगे कि राजा हम लोगों से अपनी रानी को छिपाते हैं। यह और भी निन्दा की बात

होगी । इसलिए तुम मेरे ही पास बैठो ।"

पद्मावती ने महाराज की बात मान ली और वहीं बैठ गई। वे दोनों उज्जैन के कुशल समाचार जानने को बड़े उत्सुक थे । डर भी रहे थे । इसलिए उन्होंने कंचुकी और धाय को तुरन्त वहाँ बुला भेजा । दोनों ने आकर महाराज को प्रणाम किया । फिर दोनों ओर का कुशल-मंगल जान लेने के बाद कंचुकी ने महाराज महासेन का संदेशा दिया कि आपने शत्रु से जो अपना राज्य फिर पा लिया है, इस बात को सुनकर उन्हें बड़ा हर्ष हुआ है । जो कायर हैं, वह हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहते हैं। उद्यमी पुरुष ही राजलक्ष्मी को पाते हैं। आप उत्साही हैं, इस बात से वह बड़े प्रसन्न हैं ।

महाराज बोले, "यह सब उन्हींका प्रभाव है । उन्होंने मुझे विन्ध्य के जंगलों से पकड़ मंगवाया था । फिर भी पुत्र की तरह पाला । मैं उनकी बेटी को भगा लाया, लेकिन उसकी रक्षा नहीं कर सका । वह स्वर्ग सिधार गई । यह सब होने पर भी वह मुझसे नाता नहीं तोड़ रहे हैं । उन्हींकी कृपा से मैंने अपना देश वापस पाया है ।"

इसके बाद महारानी अंगारवती का संदेश देने के लिए धाय आगे बढ़ी, तो महाराज बड़े व्याकुल हो उठे ।

वासवदत्ता की याद हो आने से उनका दिल भर आया। इसपर धाय और कंचुकी उन्हें धीरज बंधाने लगे। कंचुकी बोला, "महाराज, धीरज धरो। वासवदत्ता मर कर भी जी रही हैं। आप उन्हें इतना याद करते हैं। लेकिन यह संसार तो जंगल के पेड़ों की तरह है, जो समय-समय पर कटता-बढ़ता रहता है। इसलिए इस दुःख को आप भुला दें।" धाय बोली, "महारानी ने आपसे कहा है—वासवदत्ता अब नहीं है, फिर भी तुम हमारे बेटों के समान हो। हम तो वासवदत्ता का विवाह तुमसे ही करना चाहते थे। इसीलिए तुम्हें उज्जैन बुलाया था, पर तुम चपल होने के कारण बिना विवाह के ही उसे ले गए। तुम्हारे जाने के बाद हमने तुम दोनों के चित्र बनवाये थे और विवाह-संस्कार किया था। वे ही चित्र तुम्हारे पास भेज रही हूँ। इनको देखकर तुम्हें कुछ धीरज होगा।"

महाराज यह सुनकर बड़े खुश हुए। बोले, "यह प्रेम-भरा सन्देशा माता के ही योग्य है। मैं अपराधी हूँ, फिर भी वह मुझे इतना प्यार करती हैं। उनका यह संदेशा मुझे सैकड़ों राज्यों से अधिक प्यारा है।"

पद्मावती ने देवी वासवदत्ता का चित्र देखने की इच्छा प्रकट की और जब धाय ने वह चित्र उसे दिया तो उसे देखकर वह मन-ही-मन अचरज से काँप उठी।

H-000683
GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE-1. O15,2BHA 152038

वह चित्र आवन्तिका से मिलता था। अपना संदेह मिटाने के लिए उसने महाराज से पूछा, "क्या यह चित्र देवी वासवदत्ता से मिलता है ?"

महाराज ने कहा, "बिल्कुल वैसा ही है, मानो वासवदत्ता सामने खड़ी है।"

पद्मावती ने सोचा, अगर ऐसी बात है तो मुझे महाराज का चित्र भी देखना चाहिए। यदि वह चित्र इनसे मिल गया तो वासवदत्ता का चित्र भी वासवदत्ता से पूरा मिलता होगा।

यह सोचकर उसने महाराज का चित्र देखने के लिए मांगा और उसे देखकर उसका रहा-सहा संदेह भी जाता रहा। वह तस्वीर महाराज से पूरी तरह मिलती थी। वह सोच में पड़ गई। उसे इस तरह शंकित देखकर महाराज ने पूछा, "वासवदत्ता की तस्वीर देखकर तुम प्रसन्न भी हुईं और हैरान भी। यह क्या बात है ?"

पद्मावती ने उत्तर दिया, "देव, इस तस्वीर से मिलती-जुलती एक स्त्री मेरे पास रहती है। मेरे विवाह से पहले एक ब्राह्मण उसे मेरे पास धरोहर की तरह रख गया था। वह उस ब्राह्मण की बहन है। उसका पति कहीं परदेस गया हुआ है। वह किसी दूसरे पुरुष के सामने नहीं आती।" महाराज ने कहा, "वह कोई और होगी।

दो व्यक्तियों का एक जैसा रूप हो सकता है ।"

ये बातें हो ही रही थीं कि एक ब्राह्मण के आने की सूचना मिली । यह वही ब्राह्मण था। महाराज ने शीघ्र उसे आदरपूर्वक अन्दर लाने की आज्ञा दी और पद्मावती उसकी बहन को लेने के लिए अपने महल में चली गई। कुछ देर बाद ब्राह्मण के भेष में यौगन्धरायण ने वहां प्रवेश किया । उसका मन शंका से बेचैन हो रहा था । उसने यह सब खेल महाराज के भले के लिए खेला था । पर महाराज न जाने क्या सोच रहे होंगे। महाराज को सामने देखकर उसने उनका जय-जयकार किया ।

ये शब्द सुनकर महाराज चौंक पड़े, 'ऐसा स्वर तो कहीं सुना है' लेकिन प्रकट में उन्होंने यही कहा, "कहिए देवता, क्या आप ही अपनी बहन को पद्मावती के पास धरोहर बनाकर रख गये थे ?"

यौगन्धरायण ने उत्तर दिया, "जी हां !" इतने में पद्मावती आवन्तिका को लेकर आ गई । महाराज ने कहा, "इनकी बहन को इन्हें लौटा दो, पर चूंकि धरोहर दो व्यक्तियों के सामने लौटाई जानी चाहिए, इसलिए कंचुकी और धाय इस बात के साक्षी होंगे ।"

पद्मावती ने ब्राह्मण से कहा, "आर्य, अपनी बहन

को संभालो।"

इसी समय धाय ने आवन्तिका को देखा। वह चिल्ला उठी, "अरे, यह तो वासवदत्ता है।"

महाराज ने अचरज से पूछा, "हैं, क्या महासेन की बेटी वासवदत्ता!"

और उन्होंने वासवदत्ता से तुरन्त पद्मावती के साथ महल में जाने को कहा, लेकिन ब्राह्मण ने इस बात का विरोध किया, "नहीं-नहीं, अन्दर कैसे जायगी। अन्दर मत ले जाइए। यह तो मेरी बहन है।"

महाराज क्रोध में भर कर बोले, "तुम क्या कह रहे हो ? यह तो महासेन की पुत्री वासवदत्ता है।" यौगन्धरायण ने फिर कहा, "महाराज, आप पांडव-वंश में उत्पन्न हुए हैं। ज्ञानी हैं। आपको जबर्दस्ती प्रजा की बहू-बेटियों को नहीं छीनना चाहिए। आप ही तो राजधर्म के पालने वाले हैं।" इसपर महाराज ने कहा, "अच्छा ! हम स्वयं जाँच करेंगे। परदा हटा दो।"

महाराज का यह कहना था कि यौगन्धरायण और वासवदत्ता दोनों ने अपने-आपको प्रकट कर दिया। दोनों ने महाराज की जय-जयकार की। महाराज चकित रह गए। उनके सामने यौगन्धरायण और वासवदत्ता जीते-जागते खड़े थे। वह बोल उठे, "क्या यह सच्ची घटना

है या सपना ? क्या मैं देवी वासवदत्ता को फिर देख रहा हूँ ?"

यौगन्धरायण ने कहा, "महाराज, मैंने इन्हें छिपाया था। सब अपराध मेरा है। मुझे क्षमा करें।"

और वह महाराज के चरणों में गिर पड़े। महाराज ने तुरन्त उन्हें उठाया और कहा, "आप ब्राह्मण हैं, ऐसा न करें। और फिर जब-जब हमपर आपदाएं आईं आप ही ने तरह-तरह के उपाय करके, कूटचाल से, युद्ध से, शास्त्र में लिखी राजनीति के अनुसार हमारी रक्षा की। आप तो हमारे उपकारी हैं।"

पद्मावती ने भी वासवदत्ता के चरण छूकर क्षमा मांगी। वासवदत्ता ने उसे गले लगाते हुए कहा, "सौभाग्यवती, अपराध तो तुम अब कर रही हो।"

यह सब होने पर महाराज ने यौगंधरायण से वासवदत्ता को छिपाने का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया, "महाराज, अपने राज्य को फिर से पाने के लिए ही मैंने यह सब किया था।" महाराज बोले, "लेकिन उसे पद्मावती के पास क्यों रखा ?"

यौगन्धरायण ने बताया, "महाराज, ज्योतिषियों ने कहा था कि पद्मावती आपकी रानी होगी, इसलिए देवी वासवदत्ता को हमने इन्हींके पास रखा।"

महाराज ने फिर पूछा, "क्या ये सब बातें रुमण्वान को मालूम थीं ?"

यौगन्धरायण ने कहा, "महाराज, यह बात तो सभी मंत्रियों को मालूम थी ।"

महाराज हँस पड़े । बोले, "अरे, यह रुमण्वान बड़ा कपटी है ।"

इसके बाद यौगन्धरायण ने कहा, "महाराज, देवी वासवदत्ता का कुशल समाचार देने के लिए कंचुकी और धाय को अब शीघ्र उज्जैन भेजना चाहिए ।"

महाराज बोले, "नहीं-नहीं । देवी पद्मावती सहित हम सभी वहाँ चलेंगे ।"

यौगन्धरायण ने उत्तर दिया, "जैसी महाराज की इच्छा ।"

इस प्रकार बिछुड़े हुए वे सब लोग एक-दूसरे से मिले और महाराज उदयन फिर से वत्स-देश पर राज्य करने लगे ।

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

पुस्तक	लेखक	मूल्य
आत्मकथा	(गांधीजी)	५)
प्रार्थना-प्रवचन २ भाग	„	५॥)
गीता-माता	„	४)
पंद्रह अगस्त के बाद		१॥), २)
धर्मनीति	„	१॥), २)
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३॥)
मेरे समकालीन	„	५)
आत्म-संयम	„	३)
गीता-बोध	„	॥)
अनासक्तियोग	„	१॥)
ग्राम-सेवा	„	।=)
मंगल-प्रभात	„	।=)
सर्वोदय	„	।=)
नीति-धर्म	„	।=)
आश्रमवासियों से	„	।=)
हमारी मांग	„	१)
सत्यवीर की कथा	„	।)
संक्षिप्त आत्मकथा	„	१) १॥)
हिंद-स्वराज्य	„	॥।)
अनीति की राह पर	„	१)
बापू की सीख	„	॥)
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)	„	१=)
आज का विचार (दो भाग)		॥।)
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	„	१॥।)
गांधीजी ने कहा था ३ भाग		॥।)
शान्ति-यात्रा	(विनोबा)	१॥)
विनोबा के विचार : २ भाग		३)
गीता-प्रवचन	„	१),१॥)
जीवन और शिक्षण	„	२)
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	„	१)
ईशावास्यवृत्ति	„	॥।)
ईशावास्योपनिषद	„	=)
सर्वोदय-विचार	„	१=)
स्वराज्य-शास्त्र	„	॥)
गाँधीजी को श्रद्धांजलि	„	।=)
भूदान-यज्ञ	(विनोबा)	।)
राजघाट की संनिधि में	„	॥=)
विचार-पोथी	„	१)
सर्वोदय का घोषणा-पत्र	„	।)
जमाने की माँग	„	=)
मेरी कहानी	(नेहरू)	८)
„ संक्षिप्त	„	२॥)
हिन्दुस्तान की समस्याएं	„	२)
लड़खड़ाती दुनिया	„	२)
राष्ट्रपिता	„	२)
राजनीति से दूर	„	२)
हमारी समस्याएँ		॥।)
विश्व-इतिहास की झलक		२१)
सं० हिन्दुस्तान की कहानी		५)
नया भारत	„	।)
आजादी के आठ साल	„	।)
गांधीजी की देन	(रा० प्र०)	१॥)
गांधी-मार्ग	„	=)
महाभारत-कथा	(राजाजी)	५)
कुब्जा-सुन्दरी	„	२)
शिशु-पालन	„	॥)
मैं भूल नहीं सकता	(काटजू)	२॥)
कारावास-कहानी	(सु. नै.)	१०)
गांधी की कहानी	(लु० फि०)	४)
भारत-विभाजन की कहानी		४)
बापू के चरणों में		२॥)
इंग्लैंड में गाँधीजी		२)
बा, बापू और भाई		॥)
गांधी-विचार-दोहन		१॥)
सर्वोदय-तत्व-दर्शन		७)
सत्याग्रह-मीमांसा		३॥)
बुद्ध-वाणी	(वियोगी हरि)	१)
सन्त-सुधासार	„	११)
श्रद्धाकण	„	१)
अयोध्याकाण्ड	„	१)

भागवत-धर्म (ह० उ०)	५।।)
श्रेयार्थी जमनालालजी,,	६।।)
स्वतन्त्रता की ओर ,,	४)
बापू के आश्रम में ,,	१)
मानवता के झरने (माव०)	१।।)
बापू (घ० बिड़ला)	२)
रूप और स्वरूप ,,	।।=)
डायरी के पन्ने ,,	१)
ध्रुवोपाख्यान ,,	।)
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय)	१)
मेरी मुक्ति की कहानी,,	१।।)
प्रेम में भगवान ,,	२)
जीवन-साधना ,,	१।)
कलवार की करतूत ,,	।)
हमारे जमाने की गुलामी,,	।।।)
बुराई कैसे मिटे ? ,,	१)
बालकों का विवेक ,,	।।)
हम करें क्या ? ,,	३।।)
धर्म और सदाचार ,,	१।)
अँधेरे में उजाला ,,	१।।)
ईसा की सिखावन ,,	१)
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल)	२)
लोक-जीवन (कालेलकर)	३।।)
साहित्य और जीवन	२)
कब्ज (म० प्र० पोद्दार)	१)
हिमालय की गोद में,,	२)
कहावतों की कहानियाँ,,	२)
राजनीति-प्रवेशिका	१)
जीवन-संदेश (ख० जिब्रान)	१।)
अशोक के फूल	३)
जीवन-प्रभात	५)
कां० का इतिहास २ भाग	२०)
पंचदशी	१।।)
सप्तदशी	२)
रीढ़ की हड्डी	१।।)
अमिट रेखाएं	३)
एक आदर्श महिला	१)
राष्ट्रीय-गीत	।)
तामिल-वेद (तिरुवल्लुवर)	१।।)
थेरी-गाथाएं	१।।)
बुद्ध और बौद्ध साधक	१।।)
जातक-कथा (आनंद को०)	२।।)
हमारे गाँव की कहानी	१।।)
खादी द्वारा ग्राम-विकास	।।।)
साग-भाजी की खेती	३)
ग्राम-सुधार	१।)
पशुओं का इलाज	।।)
चारादाना	।)
रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१=)
रोटी का सवाल (क्रोपा०)	३)
नवयुवकों से दो बातें ,,	।=)
पुरुषार्थ (डा० भगवान्‌दास)	६)
काश्मीर पर हमला	२)
शिष्टाचार	।।)
तट के बंधन	२)
भारतीय संस्कृति	३।।)
आधुनिक भारत	५)
फलों की खेती	२।।)
मैं तन्दुरुस्त हूँ या बीमार	।।)
नवजागरण का इतिहास	३)
गांधीजी की छत्रछाया में १।।)	२।।)
भागवत्-कथा	३।।)
जय अमरनाथ	१।।)
हमारी लोककथाएँ	१।।)
संस्कृत-साहित्य-सौरभ (२३ पुस्तकें) प्रत्येक	।=)
समाज-विकास-माला (४४ पुस्तकें) प्रत्येक	।=)
कृषि-ज्ञान-कोष	४)
प्रकाश की बातें	१।।)
धरती और आकाश	१।)
मेरी जीवन-यात्रा	२)

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE..................
ACC NO..................
CALL NO..................

MAHATMA GANDHI MEMORIAL LIBRARY
5, Kumara Park (East), Bangalore-1

DATE LABLE

CL. No 015,2BHA 152 43N56;1 Accn. No H·000682

This book ought to be returned on or before the date last marked below, or fines will be incurred.

Due Date	Ticket No.	Inls.	Due Date	Ticket No.	Inls.

'संस्कृत साहित्य-सौरभ' की पुस्तकें

१. कादम्बरी
२. उत्तररामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुन्तला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानन्द
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार चरित : भाग १
१५. दशकुमार चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालतीमाधव
१९. शिशुपाल-वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमार संभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र

मूल्य प्रत्येक का छः आना

११

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना